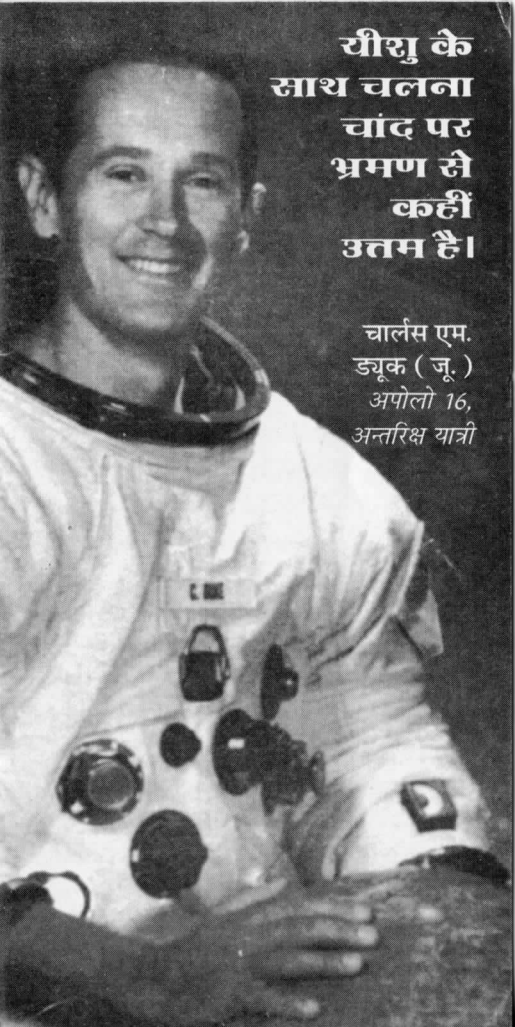

यीशु के साथ चलना चांद पर भ्रमण से कहीं उत्तम है।

चार्लस एम. ड्यूक (जू.)
अपोलो 16, अन्तरिक्ष यात्री

यीशु के साथ चलना चांद पर भ्रमण से कहीं उत्तम है।

– चार्लस एम. ड्यूक (जू.)

अपोलो 16, अन्तरिक्ष यात्री

अपने छः साल की कड़ी प्रशिक्षण के बाद मैं अपोलो 16 के अन्तरिक्ष यात्री के रूप में चांद पर जाने के लिये उत्सुक था। प्रशिक्षण के बाद मुझे उस पल का इन्तजार था जब मैं अपनी यात्रा शुरु करूं।

आखिरकार, वो दिन आया जब हम तीन यात्री (जॉन यंग, केन मेटिंगली और मैं) अंतरिक्ष यान के अन्दर अपनी कुर्सियों पर अपने स्ट्रेप्स बांधे आखिरी क्षणों का इन्तजार करने लगे।

चांद की तरफ अपनी यात्रा के लिए जैसे ही 'सेटर्न वी.' रोकेट का इंजन शुरु हुआ, मेरा पूरा शरीर बुरी तरह कंपन करने लगा। 5 सेकंड, 4 सेकंड 3,2,1, और आखिरकार यान चांद की ओर उड़ने लगा।

कुछ पलों के अन्दर ही हमने अन्तरिक्ष में प्रवेश कर लिया। अंतरिक्ष में मेरी 11 दिन की रोचकजनक यात्रा शुरु हो चुकी थी। हमारा यान तेजी के साथ अन्तरिक्ष में बढ़ रहा था। मेरे लिये वह न भूलने वाला क्षण था। हम पृथ्वी से लगभग 18,000 मील दूर अन्तरिक्ष में थें, जहां से पृथ्वी एक सुनहरे हीरे के समान दिखाई दे रही थी। समुद्र का नीलापन, धरती का भूरापन, पहाड़ों पर जमी सफेद बर्फ एक अलग ही दृश्य प्रस्तुत कर रहा था। ऐसा लगता था

मानों जैसे कोई छोटा हीरा काले विशाल अन्तरिक्ष में लटक रहा हो।

जब मैं चांद पर उतर कर चलने लगा, तो अचम्भे से मेरी सांसे मानों रुक सी गई। हर तरफ अद्‌भुत दृश्य था। वहां की धरती अभी भी अछूती और अलग सी थी। मुझे अपने ऊपर गर्व था कि मैं उन कुछ लोगों में से एक था जिन्होंने चांद पर चलने का अनुभव प्राप्त किया। यह मेरी जिन्दगी का सबसे अनोखा पल था।

सदैव नए क्षितिजों की ओर

मैंने अपने जीवन में हमेशा सफल होना चाहा था। मैंने कठिन मेहनत करके हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद सेन्ट पीटरसन में ऐडमिरल फेरागुट ऐकेडमी से स्नातक की डिग्री और यू.एस. नवल ऐकेडमी से विज्ञान स्नातक की डिग्री भी हासिल की। मेरी इच्छा थी कि मैं नौसेना में समुद्र पर अपना जीवन बिताऊं। लेकिन अपनी जहाज़ी मतली (उल्टी) के कारण मैं कभी भी अपनी इच्छा पूरी न कर पाया। इसलिये मैं एयर फोर्स में भर्ती हो गया, और एक लड़ाकू हवाई जहाज का एक अच्छा चालक बना।

अपनी ऐअरफोर्स की सेवा के दौरान मैंने अपनी नजरें ऊंचाईयों को छूनें पर केन्द्रित की। तीन साल तक जर्मनी में रहने के बाद मैं अमरीका गया जहां मेसाच्वोसेट इन्स्टीट्यूट ओफ टेकनोलोजी से वायुयान व अन्तरिक्ष यान सम्बन्धी अपनी पढ़ाई पूरी की। इसी दौरान मेरी 'डोटी' से मुलाकात हुई, जिससे

बाद में मैंने शादी की।

उज्ज्वल भविष्य की शुरुआत

एक दिन मैंने लॉस ऐन्जलस टाईम्स में पढ़ा कि कुछ अन्तरिक्ष यात्रियों का चयन होने जा रहा है। इसलिये NASA (अन्तरिक्ष एजेन्सी) में अन्तरिक्ष यात्री बनने के इरादे से मैंने अपना आवेदन पत्र भेजा। यहां 1966 में बड़ी आसानी से मेरा चयन हो गया। अब मेरा नाम समाचार पत्रों में आने लगा तथा पार्टियों में भी शामिल होने के लिये आमन्त्रण मिलने लगे थे। समाज ने मुझें बहुत सम्मान देना शुरु किया।

मुझे अपने जीवन के शुरुआती दिनों में ही खूब सफलता मिलने लगी। मुझे ऐसा लगता था जैसे मेरा सपना साकार होने जा रहा है। मैं कठिन परिश्रम करने लगा। मैं अब शिखर पर पहुंचना चाहता था। यह शिखर - चांद की यात्रा थी। यह सपना और मेरा काम अब मेरे देवता बन चुके थे।

मेरी पत्नी मेरे काम से परेशान रहने लगी। उसने अपने जीवन में हमारे वैवाहिक संबंध को हमेशा महत्व दिया। लेकिन हमारा विवाह फिर भी असफल हो रहा था। चांद की मेरी यात्रा के बाद, वह और भी निराश रहने लगी, यहां तक कि आत्महत्या के विचार उसके मन में अक्सर उठने लगे।

मेरा केवल एक ही उद्देश्य था, कि मैं चांद की अपनी यात्रा पूरी करूं। इस सपने को पूरा करने के बाद मैं अपने आप से पूछने लगा, "अब मैं क्या करने वाला हूं?" बाद में मैंने फैसला किया कि अपने व्यवसाय को छोड़कर मैं एक व्यापारी बन

जाऊं। मैं चाहता था कि मैं खूब पैसा कमाऊं, हालांकि मेरी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी।

करोड़पति बनने के प्रयास में यद्यपि मैंने अपने व्यापार में काफी सफलता प्राप्त कर ली थी, फिर भी मैं असंतुष्ट रहा। जीवन की सफलताओं के बावजूद जिन्दगी खाली और व्यर्थ थी। उस समय मुझे यह ज्ञात नहीं था कि मेरी परेशानियों का मूल कारण क्या है।

कुछ मुश्किल सवाल

अपनी चांद की यात्रा के दौरान यद्यपि मैंने आकाशों और अन्तरिक्ष में भ्रमण किया, लेकिन मैं परमेश्वर को कभी नही प्राप्त कर पाया। चर्च में भी उसे नहीं पाया। मैं विश्वास करता था कि यीशु मसीह, मोहम्मद साहब, बुद्धा और अन्य अवतारों की तरह केवल एक अच्छे शिक्षक और मार्गदर्शक थे।

अमरीकी एजेन्सी, NASA को छोड़ने के बाद मैंने अपनी पत्नी डोटी के अन्दर एक नवीनता देखने लगा। मैंने पहली बार उसके अन्दर शान्ति और उद्देश्य को महसूस किया। वह मुझसे एक नई रीति से प्रेम भी करने लगी थी। मेरी पत्नी ने मुझसे यीशु मसीह से प्राप्त एक नए जीवन के बारे में बताया।

इस बीच मैंने अपने व्यवसाय को छोड़ दिया। फिर एक महीने पश्चात एकदिन मेरी पत्नी ने मुझे एक प्रार्थना सभा में आमंत्रित किया। वहां जब मैं बाइबल पढ़ रहा था, अचानक मेरी आंखो से आंसू बहने लगे। मैंने महसूस किया कि सृष्टि को बनाते समय परमेश्वर ने हमसे कितना प्रेम किया। मैंने देखा है कि इन्सान उस परमेश्वर से कितना दूर हो

गया है, जिसने हमेशा एक ही बात कही- ''तुम मेरी तरफ आओ क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर हूं। ऐसा करने से मैं तुम्हें आशीषों और शान्ति से भर दूंगा।'' पवित्र आत्मा का एक-एक वचन इस सत्य परमेश्वर, यीशु मसीह जी, की ओर संकेत करता है कि वही हमारी मुक्ति का एक मात्र मार्ग हैं।

मैंने महसूस किया कि जीवन का यह सबसे महत्वपूर्ण सवाल मेरे सामने खड़ा है। यीशु जी की आवाज मेरी आत्मा में गूँजने लगी। ''तुम्हारा क्या विश्वास है कि मैं कौन हूं?'' मेरे सामने दो ही जवाब थे, या तो यीशु जी सच्चे परमेश्वर के पुत्र हैं या वह झूठे हैं।

इसमे कोई शक नही कि यीशु ही वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। घर वापस आते समय मैंने मेरी पत्नी से कहा, ''मेरे मन में कतई भी संदेह नही है। अवश्य यीशु मसीह जी, ही सच्चा परमेश्वर हैं।'' उसी वक्त मैंने प्रभु यीशु जी से प्रार्थना करके, मेरे जीवन का एकमात्र ईश्वर और मालिक बनने की विनती की। और मैंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके एक नया-जन्म और शान्ति प्राप्त कर लिया।

परमेश्वर के साथ धरती पर चलना

मैंने महसूस किया है कि अब मेरा जीवन बिल्कुल बदल गया है। बाइबल में कहे गए परमेश्वर के अटल वचनों को पढ़ते समय मैं यह जान गया कि विश्वास से परमेश्वर यीशु जी को मेरे जीवन में ग्रहण करने के कारण मेरे पापों से मुझे मुक्ति मिल चुकी है और मैं परमेश्वर का संतान बन गया हूँ। मेरे जीवन में शान्ति आ चुकी थी, अब मेरे अन्दर बाइबल के

सत्य वचनों को जानने की भूख पैदा हो गई। मैंने प्रार्थना की "हे परमेश्वर, मुझे बाइबल में तेरे सत्य वचनों के बारे में सिखा जो वचन में लिखा है।"

प्रभु से मैं अब यह प्रार्थना भी करने लगा, "हे पिता, मेरी मदद कर ताकि मैं अपनी पत्नी से प्यार कर सकूं। परमेश्वर, मुझे एक अच्छा पति और एक अच्छा पिता बना।"

प्रार्थना के अनुसार परमेश्वर ने ऐसा किया भी। उसने अपना प्यार मुझ में भर दिया। उसने हमारे वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया। हमने अपने जीवन में यीशु को पहला स्थान दिया। हमने उसी के प्यार के द्वारा एक दूसरे के लिये जीना भी सीख लिया।

समय के साथ साथ मैंने चाहा कि मैं यीशु के बारे में और जानूं। एक रात मैं अचानक अपने कमरे में उठ बैठा और उसकी उपस्थिति को महसूस किया। मैं तुरन्त घुटनों के बल हो गया और अपना सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर के हाथों में सौप दिया। मैं पवित्र आत्मा से भर गया। मैंने अपने अन्दर एक ऐसी सामर्थ को महसूस किया जिसके द्वारा मैं यीशु के बारे में दूसरों को बता सकूं।

आज जो जीवन मैं जी रहा हूँ वह परमेश्वर के प्यार, शान्ति, खुशी और आनन्द से भरा हुआ है। यीशु मसीह से प्रार्थना करने पर मैंने अन्धों को देखते हुये, बहरों को सुनते हुए, केन्सर ठीक होते हुए और अन्य कई चमत्कारों की भी देखा है।

सन् 1972 में मैंने अपोलो 16 अन्तरिक्ष यान में बैठकर अन्तरिक्ष में चांद की ओर एक अद्भुत यात्रा की। इस यात्रा के पश्चात मैं कहा करता था

कि अगर मैं 10,000 वर्ष भी जीलूं फिर भी चांद पर चलने जैसा अनुभव कभी न होगा। परन्तु अब मैं जानता हूं कि चांद पर चलने की सन्तुष्टी और उत्तेजना कभी भी यीशु मसीह जी के साथ साथ चलने की सन्तुष्टी से बढ़कर नही हो सकती है। मैंने अपने जीवन में यीशु मसीह जी के साथ चलने के अनुभव को महसूस किया है। एक ऐसा अनुभव जिसे मैं कभी नही भूला सकता। परमेश्वर के साथ चलना हमेशा के लिये उसमें समर्पित होना है। यीशु मसीह जी का साथ (संगति) ही हमारे जीवन का मूल है।

मेरी प्रार्थना यही है कि आप भी मेरे साथ इसी सनातन जीवन में चलें ताकि यीशु मसीह आपके हृदयों में आपके मुक्तिदाता के रूप में प्रवेश कर सके, क्योंकि वही हम सब का प्रेमी एवं सच्चा परमेश्वर है। यीशु मसीह के चरणों में ही सच्ची शान्ति और आशीष प्राप्त हो सकती है। वह ही हमारी मुक्ति का एकमात्र स्त्रोत है।

"परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उस ने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

संपर्क करें:-

Published with permission in India by
Indian Evangelical Team, New Delhi-30.